PHILOSOPHY

PG-II Sem., Paper-08 / ~~Unit 1~~ Hons.-Part I, Paper-1

Padartha (Vaiśeṣika)
वैशेषिक का पदार्थ

Dr. S. K. Singh
Dept. of Philosophy
Mob.-9431449951.

→ वैशेषिक दर्शन के प्रवर्तक आचार्य महर्षि कणाद हैं।

→ वैशेषिक दर्शन बहुत्ववादी वस्तुवाद है, जो वस्तुओं के भेद पर बल देता है।

→ वैशेषिक के अनुसार जीवन का लक्ष्य मोक्ष है, मोक्ष की प्राप्ति तत्त्वज्ञान से ही संभव है और तत्त्वज्ञान हेतु 'पदार्थ' की विवेचना आवश्यक है।

→ 'पदार्थ' की परिभाषा करते हुये कहा गया है कि 'जो अभिधेय और ज्ञेय है, वह पदार्थ है' अर्थात् जिसे किसी नाम से अभिहित किया जा सके और जो ज्ञान का विषय बन सके, वही पदार्थ है।

→ पदार्थ दो प्रकार के हैं – ~~भाव भाव पदार्थ तथा अभाव पदार्थ~~ भावात्मक तथा अभावात्मक। भावात्मक पदार्थ छः हैं – द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष और समवाय तथा अभावात्मक पदार्थ एक है – अभाव। इस प्रकार पदार्थ सात हैं – 1. द्रव्य, 2. गुण, 3. कर्म, 4. सामान्य, 5. विशेष, 6. समवाय और 7. अभाव।

1. द्रव्य :→ द्रव्य वह है जो गुण और कर्म का आश्रय हो और अपने कार्य का समवायी कारण हो – 'क्रियागुणवत् समवायिकारणं द्रव्यम्'।

→ द्रव्य गुण और कर्म का आश्रयभूत तत्त्व है और अपने कार्यों का समवायी या उपादान कारण है।

→ द्रव्य नौ (Nine) प्रकार के हैं, जिनमें जड़ और चेतन दोनों हैं। ये हैं – पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश (पंचमहाभूत) और दिक्, काल, आत्मा एवं मन।

⇒ पंचमहाभूत :- महाभूत में पृथ्वी, जल, तेज और वायु परमाणु रूप हैं तथा अनेक हैं, इन परमाणुओं के संयोग से स्थूल भौतिक पदार्थ उत्पन्न होते हैं जो इनके ~~[illegible]~~ कार्यभूत अनित्य सावयव द्रव्य हैं जो इन महाभूतों का स्थूल या मूर्त रूप है। पाँचवा महाभूत आकाश परमाणुरूप नहीं बल्कि विभु ~~और~~ या व्यापक है और एक है जो अन्य चार महाभूतों को अवकाश देता है यानी, अपने अन्तर्गत रखता है।

→ प्रत्येक महाभूत का अपना विशेष गुण है – आकाश का गुण शब्द है, वायु का गुण स्पर्श है, तेज (अग्नि) का गुण रूप है किन्तु इसमें स्पर्श भी रहता है, जल का गुण रस है किन्तु इसमें रूप और स्पर्श भी रहते हैं; पृथ्वी का गुण गंध है किन्तु इसमें रूप, रस और स्पर्श भी रहते हैं।

→ इन पाँच गुणों का ग्रहण क्रमशः अलग-अलग पाँच ज्ञानेन्द्रियों द्वारा होता है – चक्षु से रूप का, श्रोत्र से शब्द का, रसना से रस का, त्वक् से स्पर्श का और घ्राण से गंध का ग्रहण होता है क्योंकि चक्षुरिन्द्रिय तेजोभूत से, श्रोत्रेन्द्रिय आकाश से, रसनेन्द्रिय जल से, त्वगिन्द्रिय वायु से और घ्राणेन्द्रिय पृथ्वी महाभूत से निर्मित होती है।

⇒ दिक् और काल :- काल और दिक् आकाश के समान एक हैं, नित्य हैं और विभु हैं। वस्तुतः ये अखंड हैं, किन्तु व्यवहार में इनके ~~[illegible]~~ खण्डों की कल्पना कर ली जाती है।

Scanned with CamScanner

→ काल के कारण भूत, वर्तमान और भविष्य का ज्ञान होता है; ज्येष्ठ और कनिष्ठ का व्यवहार होता है तथा वस्तुओं के एककालता, भिन्नकालता, दीर्घकालता तथा अल्पकालता सिद्ध होती है।

→ दिक् भी काल की तरह ही एक और नित्य है किन्तु उपाधि भेद से अनेक है। यह पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण तथा ऊपर-नीचे, यहाँ-वहाँ, दूर-पास आदि व्यवहार का कारण है।

⇒ <u>आत्मा</u> :- आत्मा अनेक है और प्रत्येक नित्य, स्वतंत्र और विभु है। आत्मा द्रव्य ज्ञान-गुण का आश्रय है। आत्मा ज्ञानस्वरूप नहीं है, अपितु ज्ञान नामक गुण का आश्रयभूत तत्त्व है। ज्ञान आत्मा का आगन्तुक धर्म (गुण) है। आत्मा के अन्य गुणों में इच्छा, सुख, दुःख, यत्न आदि है।

⇒ <u>मन</u> :- मन अन्तरेन्द्रिय ~~अन्तः~~ है। यह भी नित्य द्रव्य है और अणुरूप है तथा अनेक है। अणुरूप होने पर भी यह पृथ्वी आदि चार महाभूतों के समान संघात का निर्माण नहीं करता। प्रत्येक बद्ध आत्मा के साथ एक मन संयुक्त रहता है जिसके द्वारा उसे विषयों का ज्ञान होता है।

→ अणुरूप होने से मन एक बार में एक ही बाह्येन्द्रिय से या एक ही मनोभाव से संपर्क कर सकता है।

→ बाह्य प्रत्यक्ष ज्ञान में पहले इन्द्रिय और पदार्थ (बाह्यवस्तु) का सन्निकर्ष होता है और फिर मन तथा इन्द्रिय का सन्निकर्ष होता है (पदार्थ ↔ ज्ञानेन्द्रिय ↔ मन); मनोभाव के अनुभव में मन का मनोभाव से सीधा संपर्क होता है (मनोभाव ↔ मन)।

→ मन का प्रत्यक्ष नहीं होता, उसके कार्यों से उसका अनुमान किया जाता है।

<u>संक्षेप में</u>

पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश पंचमहाभूत हैं। ये और मन भौतिक हैं। पृथ्वी, जल, तेज और वायु तथा मन अणुरूप हैं। भूत-परमाणु संघात बनाते हैं; मन-परमाणु अकेला ही रहता है, अन्य मन के साथ संहत नहीं होता। आत्मा अभौतिक और ज्ञानाश्रय है। काल और दिक् द्रव्यरूप हैं, व्यक्तिगत नहीं हैं। आकाश, दिक्, काल और आत्मा विभु और नित्य हैं। ~~परमाणु, महाभूत परमाणु, मन और आत्मा — प्रत्येक ३~~ पृथ्वी, जल, तेज, वायु के परमाणु, मन और आत्मा — ये सभी अनेक हैं। आकाश, दिक् और काल एक-एक हैं।

2. <u>गुण</u> :- अभिधेय और ज्ञेय होने के कारण गुण को पदार्थ माना गया है।

→ गुण द्रव्य के समान स्वतंत्र पदार्थ नहीं है। गुण द्रव्य पर आश्रित रहते हैं। गुण के गुण या कर्म नहीं होते।

→ गुण के अन्तर्गत भौतिक और मानस दोनों प्रकार के गुण आ जाते हैं। कुछ गुण द्रव्य के आवश्यक धर्म होते हैं।

→ कणाद ने सत्रह गुणों का उल्लेख किया है जिनमें प्रशस्तपाद ने सात और जोड़कर गुणों की संख्या चौबीस कर दी है। रूप, ~~रस~~, रस, गंध, स्पर्श, शब्द, संयोग, ~~विभाग~~ विभाग, बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न - कुछ प्रमुख गुण हैं।

3. <u>कर्म</u> :- गुण के समान कर्म भी द्रव्य पर आश्रित रहनेवाला धर्म है। यह गुण से भिन्न है। यह वस्तुओं के संयोग और विभाग का कारण है।

→ कर्म मूर्त द्रव्यों में ही रहता है, विभु (व्यापक) द्रव्यों में नहीं।

→ कर्म पाँच प्रकार के होते हैं - उत्क्षेपण (ऊपर फेंकना), अपक्षेपण (नीचे फेंकना), ~~आकुं~~ ~~आकुंचन~~ आकुंचन (सिकोड़ना), प्रसारण (फैलाना) और गमन (चलना)।

4. <u>सामान्य</u> :- सामान्य को जाति भी कहते हैं। सामान्य को नित्य, एक और अनेकानुगत माना गया है - 'नित्यमेकमनेकानुगतं सामान्यम्'। यहाँ अनेकानुगत का आशय है - किसी वर्ग के सभी सदस्यों में अनुगत रहना अर्थात् समवाय संबंध से विद्यमान रहना।

Scanned with CamScanner

→ अलग-अलग मनुष्य व्यक्ति हैं, किन्तु सभी मनुष्यों में अनुगत रहनेवाला 'मनुष्यत्व' सामान्य है। सामान्य के कारण ही एक व्यक्ति अपने जाति का सदस्य बनता है।
→ सामान्य एक है किन्तु जिन व्यक्तियों में यह रहता है, वे अनेक हैं।
→ सामान्य नित्य है किन्तु जिन व्यक्तियों में यह रहता है वे अनित्य तथा उत्पादविनाशशील हैं।
→ एक वर्ग के सदस्यों में एक ही सामान्य रहता है। सामान्य द्रव्य, गुण और कर्म में रहता है।
→ एक सामान्य दूसरे सामान्य में नहीं रह सकता अन्यथा एक व्यक्ति एक साथ ही मनुष्य, घोड़ा या बैल आदि बन सकता है।
→ इस प्रकार वस्तुवादी वैशेषिक सामान्य की वस्तुगत सत्ता स्वीकार करता है।

5. विशेष :- वैशेषिक दर्शन में 'विशेष' नामक पदार्थ एक विशेष अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। आगन्तुक पदार्थों में भेद उनके अवयव संस्थान के भेद से, उनके गुण-भेद से और कर्म-भेद से स्पष्ट प्रतीत होता है, किन्तु जिन नित्य द्रव्यों में परमाणुओं में किसी प्रकार का भेद करना संभव नहीं है, उन द्रव्यों में भेद करने के लिये विशेष नामक पदार्थ की कल्पना की गई है।
→ प्रत्येक नित्य द्रव्य में - परमाणु, आत्मा, मन में तथा आकाश, दिक् और काल में अपना विशेष होता है जो उन्हें अन्य द्रव्यों से भिन्न बनाता है।
→ नित्य द्रव्य में रहनेवाले ये विशेष भी नित्य होते हैं; नित्य द्रव्य अनन्त हैं अतः उनके विशेष भी अनन्त हैं एवं प्रत्येक विशेष स्वभावतः व्यावर्तक होता है अर्थात् एक नित्य द्रव्य में रहनेवाला विशेष उसे अन्य नित्य द्रव्यों से भिन्न बनाता है और एक विशेष दूसरे विशेष से स्वतः भिन्न होता है। यदि विशेष को स्वतः व्यावर्तक नहीं माना जाये तो अनवस्था दोष आ जायेगा।

6. समवाय :- 'समवाय' नित्य एवं अपृथक् सम्बन्ध है जबकि 'संयोग' अनित्य तथा पृथक्कालीन संबंध है। अतः समवाय को पदार्थ और संयोग को गुण माना गया है। ~~समवाय नामक नित्य संबंध दो अयुत~~
→ समवाय नामक नित्य सम्बन्ध दो अयुतसिद्ध वस्तुओं में होता है। अयुतसिद्ध वस्तु-युगल में एक को दूसरे से पृथक नहीं किया जा सकता तथा उनमें एक वस्तु आश्रय या आधार होती है और दूसरी आश्रित या आधार्य।
→ द्रव्य और गुण में, द्रव्य और कर्म में, सामान्य और व्यक्ति (विशेष) में, नित्य द्रव्य और विशेष में तथा अवयव एवं अवयवी में - इन युगल-पंचक में समवाय सम्बन्ध होता है।

7. विरुद्ध अभाव :- अभाव दो प्रकार का होता है - संसर्गाभाव तथा अन्योन्याभाव।
⇒ A. संसर्गाभाव :→ इसमें दो वस्तुओं के सम्बन्धों का निषेध किया जाता है; जैसे - 'क' 'ख' नहीं है। यह तीन प्रकार का होता है - (i) प्रागभाव, (ii) प्रध्वंसाभाव और (iii) अत्यन्ताभाव।
(i) प्रागभाव → इसका अर्थ है उत्पत्ति के पूर्व कारण में कार्य का अभाव; जैसे उत्पत्ति के पूर्व मिट्टी में घट का अभाव। यह अनादि और सान्त है।
(ii) प्रध्वंसाभाव → इसका अर्थ है विनाश के बाद उस वस्तु का अभाव; जैसे - ध्वंस होने के बाद घर का अभाव। यह सादि और अनन्त है।
(iii) अत्यन्ताभाव → अत्यन्ताभाव त्रिकाल में अभाव है; जैसे - शशशृंग, आकाशकुसुम का अभाव। यह अनादि और अनन्त है।

⇒ B. अन्योन्याभाव :- यह दो वस्तुओं का पारस्परिक भेद है; जैसे - 'क' 'ख' नहीं है, घर पर नहीं है। यह दो वस्तुओं के तादात्म्य का अभाव है। यह भी अनादि और अनन्त है।

→ यदि प्रागभाव न हो तो सभी वस्तुएँ अनादि हो जायेंगी, यदि प्रध्वंसाभाव न हो तो सभी वस्तुएँ नित्य हो जायेंगी, यदि अत्यन्ताभाव न हो तो सभी वस्तुएँ सदा और सर्वत्र विद्यमान रहेंगी। यदि अन्योन्याभाव न हो तो सभी वस्तुएँ अभिन्न हो जायेंगी।

— Dr. S. K. Singh
Dept. of Philosophy
Mob. - 9431449951.

Scanned with CamScanner